Сказание о Савитри Глава 3

॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ अथ कन्याप्रदानाय वैवाहिकमचिन्तयत् । समानिन्ये च तत्सर्वं भाण्डं वैवाहिकं नृपः ॥ १॥

vaivāhika - свадебный; n свадьба; sam-ā√nī I U. - собирать; созывать, приносить; bhānḍa n - горшок, сосуд, посуда, утварь;

ततो वृद्धान्द्विजान्सर्वानृत्विजः सपुरोहितान्। समाहृय दिने पुण्ये प्रययो सह कन्यया॥ २॥

मेध्यारण्यं स गत्वा च द्युमत्सेनाश्रमं नृपः। पद्भ्यामेव द्विजैः सार्धं राजिषं तमुपागमत्॥ ३॥

medhyāraṇya n - священный лес; rājarṣi m - мудрец царского происхождения, царь-отшельник;

तत्रापश्यन्महाभागं शालवृक्षमुपाश्रितम् । कौश्यां बृस्यां समासीनं चक्षुर्हीनं नृपं तदा ॥ ४॥

śāla *m* - название дерева Shorea Robusta;

kuśa *m* - священная трава Poa annua;

kauśya - сделанный из травы kuśa;

brs \bar{i} f - подушка;

sam√ās II Р. - сидеть вместе, сидеть;

स राजा तस्य राजर्षेः कृत्वा पूजां यथार्हतः। वाचा सुनियतो भूत्वा चकारात्मनिवेदनम्॥ ५॥

уаthārhatas adv. - по достоинству, как следует; suniyata - очень воздержанный, очень скромный (+vācā на язык, в речи); nivedana n - извещение;

तस्यार्घ्यमासनं चैव गां चावेद्य स धर्मवित्। किमागमनमित्येवं राजा राजानमब्रवीत्॥ ६॥

arghya n - почетная вода (для гостя и др. почетных лиц); $\bar{a}\sqrt{vid}$ II P. caus. - извещать, предлагать;

तस्य सर्वमभिप्रायमितिकर्तव्यतां च ताम्। सत्यवन्तं समुद्दिश्य सर्वमेव न्यवेद्यत्॥ ७॥

abhiprāya m - план, намерение; itikartavyatā f - подлежащее выполнению дело, долг, обязанность; sam-ud $\sqrt{\text{diś}}$ VI P. - указывать на ч.-л.;

॥ अश्वपतिरुवाच ॥ सावित्री नाम राजर्षे कन्येयं मम शोभना । तां स्वधर्मेण धर्मज्ञ स्त्रुषार्थे त्वं गृहाण मे ॥ ८॥

॥ द्युमत्सेन उवाच॥

च्युताः स्म राज्याद्वनवासमाश्रिताश्चराम धर्मं नियतास्तपस्विनः। कथं त्वनर्हा वनवासमाश्रमे निवत्स्यते क्लेशिममं सुता तव॥९॥

 $\sqrt{\text{суu}}$ (Ā. I, р.р. суuta) - колебаться, падать, удаляться, лишаться; p.p. лишенный, без ч.-л.; anarha - незаслуживающий (ч.-л. нехорошего), невинный; kleśa m - трудность, неудобство;

॥ अश्वपतिरुवाच ॥

सुखं च दुःखं च भवाभवात्मकं यदा विजानाति सुताहमेव च। न मिह्ये युज्यित वाक्यमीदृशं विनिश्चयेनाभिगतो ऽस्मि ते नृप॥ १०॥

-ātmaka - состоящий из, имеющий природу, кому свойственно; mad-vidha - подобный мне; такой же, как я; viniścaya *m* - твердое намерение, решение;

आशां नार्हास मे हन्तुं सोहृदात्प्रणतस्य च। अभितश्चागतं प्रेम्णा प्रत्याख्यातुं न मार्हास ॥ ११ ॥

āśā f - желание, надежда; $\sqrt{\text{аrh I P. - мочь, быть способным; arh} + inf. - выражение вежливой просьбы; abhitas <math>adv$ - вокруг, кругом, сюда, к; preman m, n - дружба, любовь; praty- $\overline{\text{a}}\sqrt{\text{khyā II P. - отказывать;}}$

अनुरूपो हि संयोगे त्वं ममाहं तवापि च । स्नुषां प्रतीच्छ मे कन्यां भार्यां सत्यवतः सुताम् ॥ १२ ॥

anur \overline{u} ра - соответствующий, подходящий, достойный; samyoga m - соединение, союз, отношение родства; брак, супружество;

pratīş (prati√iş) VI Р. - принимать;

॥ द्युमत्सेन उवाच ॥ पूर्वमेवाभिलिषतः संबन्धो मे त्वया सह । भ्रष्टराज्यस्त्वहमिति तत एतद्विचारितम् ॥ १३ ॥

abhi $\sqrt{\text{laş}}$ I Р. - добиваться, желать; saṃbandha m - соединение, родственная связь; $\sqrt{\text{bhraṃ}}$ (IV Р., р.р. bhraṣṭa) - падать, выпадать, пропадать, лишаться; vicārita n - мешкание, колебание, сомнение;

अभिप्रायस्त्वयं यो मे पूर्वमेवाभिकाङ्कितः। स निर्वर्ततु मे ऽद्येव काङ्कितो ह्यसि मे ऽतिथिः॥ १४॥

 $\sqrt{\text{k}}$ аńkş (Р. І kāṅkşati, р.р. kāṅkşita) - желать; аbhi $\sqrt{\text{k}}$ айкş - id; nir $\sqrt{\text{v}}$ vart І $\bar{\text{A}}$. - состояться, исполняться;

॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

ततः सर्वान्समानाय्य द्विजानाश्रमवासिनः। यथाविधि समुद्वाहं कारयामसतुर्नृपौ॥ १५॥

yathāvidhi adv. - по установленным правилам, как предписано; samudvāha m - свадьба;

दत्त्वा सो ऽश्वपितः कन्यां यथाईं च परिच्छदम्। ययौ स्वमेव भवनं युक्तः परमया मुदा॥ १६॥

уаthārham adv. - по достоинству, как следует; paricchada m - челядь, прислуга; домашняя утварь, приданое; mud f - радость, удовольствие;

सत्यवानिप तां भार्यां लब्ध्वा सर्वगुणान्विताम्। मुमुदे सा च तं लब्ध्वा भर्तारं मनसेप्सितम्॥ १७॥

 $\sqrt{\text{mud}}$ (I $\bar{\text{A}}$., p.p. mudita) - радоваться, тешиться; *p.p.* обрадованный, веселый;

गते पितिर सर्वाणि संन्यस्याभरणानि सा। जगृहे वल्कलान्येव वस्त्रं काषायमेव च॥ १८॥

saṃ-ny√as IV Р. - отбрасывать, сбрасывать, снимать; отказываться; \overline{a} bharaṇa n - украшение, убор, наряд, драгоценности; valkala m, n - платье из мочала (одежда отшельников); \overline{k} \overline{a} \overline{s} \overline{a} уа - коричневый;

परिचारेगुणिश्चेव प्रश्रयेण दमेन च। सर्वकामिक्याभिश्च सर्वेषां तुष्टिमाद्घे॥ १९॥

рагісата m - услуга; рга́згауа m - покорность, скромность;

श्वश्रृं शरीरसत्कारेः सर्वेराच्छादनादिभिः। श्वश्रुरं देवसत्कारेः वाचः संयमनेन च॥ २०॥

satkāra m - угощение, прием, оказывание чести, внимательное обращение с к.-л.; ācchādana n - одежда, платье; saṃyamana n - обуздывание, власть над собой, натягивание (поводьев);

तथेव प्रियवादेन नैपुणेन शमेन च। रहश्चेवोपचारेण भर्तारं पर्यतोषयत्॥ २१॥

паірила n - способность, искусство, опытность; rahas n - уединение, уединенное место; $Acc.\ Loc.\ adv.$ наедине, тайно, втайне; ирас $ar{a}$ - услуга, уход, ухаживание;

एवं तत्राश्रमे तेषां तदा निवसतां सताम्। कालस्तपस्यतां कश्चिदपाकामत भारत॥ २२॥

 $\sqrt{\text{tapasya } den.}$ - подвергаться покаянию;

सावित्र्या ग्लायमानायास्तिष्ठन्त्याश्च दिवानिश्चम्। नारदेन यदुक्तं तद्वाक्यं मनसि वर्तते॥ २३॥

 $\sqrt{\text{glai}}$ (или glā, Р. І, р.р. glāna) изнуряться; истощаться;

॥ इति महाभारते सावित्र्युपाख्याने तृतीयः सर्गः॥